B-II
L-26
Ancient history

⟹ विदेशी आक्रमण

इण्डो-ग्रीक (यूनानी) ⟶ शक ⟶ पहलव / इण्डो-पार्थियन ⟶ कुषाण

⇒ इण्डो-ग्रीक / यूनानी / यवन

↳ स्रोत : यूनानी

- भारत की सीमा में प्रवेश करने वाला प्रथम शासक ⟶ डेमेट्रियस-I (183 BC)
  ↓
  पंजाब को जीतकर साकल को अपनी राजधानी बनाया।

मिनाण्डर - भारत में यूनानी शासन को स्थायित्व प्रदान किया।

- बौद्ध साहित्य में यह मिलिन्द के नाम से प्रसिद्ध है।
- संभवतः नागसेन ने इसे बौद्ध धर्म में दीक्षित किया
- मिलिन्द और नागसेन के वार्तालाप का संकलन - मिलिन्दपन्हो
- इसके समय में साकल शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था।

- भारतीय सिक्कों पर पहले केवल देवताओं के चित्र अंकित होते थे, उस पर तिथि और राजा का नाम अंकित नहीं होता था। - यूनानी शासकों ने सिक्कों पर राजाओं के नाम, तिथियां तथा उनके चित्र भी अंकित करवाये। (लिपि - यूनानी एवं खरोष्ठी)

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

- मिनाण्डर के सिक्कों पर धर्मचक्र अंकित है।
- सर्वप्रथम यवनों के आक्रमण का उल्लेख पुष्यमित्र शुंग के शासनकाल में हुआ, जिसका उल्लेख गार्गी संहिता और कालिदास के मालविकाग्निमित्रम में है।
- भारतीयों ने ज्योतिष का ज्ञान इण्डोग्रीक शासकों से प्राप्त किया, इसकी जानकारी हमें गार्गी संहिता से मिलती है।

⇒ **शक** :- अथवा सीथियन

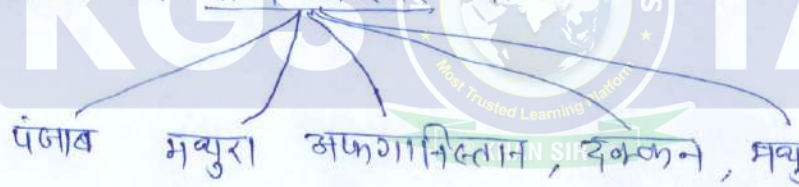

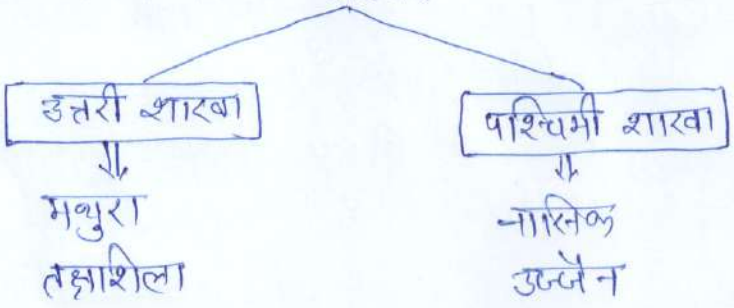

- शकों के शासन वाले स्थान को शक द्वीप/शक स्थान कहा गया है।
- शकों की पांच शाखाएं थी।
  - पंजाब
  - मथुरा
  - अफगानिस्तान
  - दक्कन
  - मथुरा
- भारत में शकों की शाखाएं
  - उत्तरी शाखा ⇓ मथुरा, तक्षशिला
  - पश्चिमी शाखा ⇓ नासिक, उज्जैन
- शक शासक स्वयं को क्षत्रप कहते थे। भारत में पश्चिमी क्षत्रप महत्वपूर्ण थे।
- इसी पश्चिमी क्षत्रप की एक शाखा क्षहरात थी, जिसका शासक नहपान था।

KGS IAS

- भारत में शकों का सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक रुद्रदामन था। जिसने सौराष्ट्र क्षेत्र में स्थित गिरनार पर्वत पर स्थित सुदर्शन झील की मरम्मत करवायी। इस झील का निर्माण चन्द्रगुप्त मौर्य ने करवाया था।

- रुद्रदामन ने ही सर्वप्रथम विशुद्ध संस्कृत का अभिलेख जारी किया। (जूनागढ़ अभिलेख) ← (इससे पहले के अभिलेख प्राकृत भाषा में हैं।)
- रुद्रदामन ने समकालीन शासक वाशीष्ठिपुत्र पुलमावी को दो बार पराजित किया परन्तु निकट संबंधी होने के कारण छोड़ दिया।

- रुद्रसिंह III - इस वंश का अंतिम शासक था, जिसे चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य II ने पराजित किया था एवं चांदी के सिक्के जारी किए थे।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

⇒ हिन्द-पार्थियन / पह्लव

↳ मूल स्थान - ईरान ⇒ प्रथम शासक → माउस

↳ सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक - गोन्दोफर्निस
⇓
फारसी → बिन्दफर्ण

→ तख्त-ए-बही (खरोष्ठी लिपि) अभिलेख में गोंदोफर्निस को "गुदव्हर" कहा गया है।
- इनके शासन काल में इसाई धर्म प्रचारक सेंट थॉमस भारत आया। (20-40 AD)
- स्रोत बताते हैं कि पार्थियन शासकों ने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था।

⇒ कुषाण

- इन्हें यूची / तोची / तोचेरियन कहा जाता था

- भारत में पहला राजवंश → कडफिसस
⇓
प्रथम शासक – कडफिसस-I
⇓
- इसके सिक्कों पर यूनानी राजा हर्मियस की आकृति है और दूसरी तरफ स्वयं की आकृति है।

- तांबे के सिक्के ढलवाया
- उपाधि - महराजाधिराज

⇒ विमकडफिसस-II
⇓
सिन्धु नदी पार की
⇓
तक्षशिला पर अधिकार / नियंत्रण
⇓
इस प्रकार भारत में कुषाण वंश की नींव डाली

- सिक्कों पर त्रिशूल, शिव और नंदी का चिह्न अंकित है। → यह शैव धर्म का अनुयायी था
↳ कुषाण काल में सर्वप्रथम सोने के सिक्के चलाये

* भारत में सर्वप्रथम सोने के सिक्के चलाये → ग्रीक/यूनानी शासकों ने

↳ उपाधि - महेश्वर

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform

⇒ कनिष्क

- शक संवत 78AD में चलाया।
- कश्मीर में कनिष्कपुर नगर बसाया
- राजधानी — प्रथम → पुरुषपुर (पेशावर)
  दूसरी → मथुरा
- मथुरा से कनिष्क की मूर्ति मिली है।
- पाटलिपुत्र पर कनिष्क का आक्रमण हुआ → वहां से प्राप्त वस्तुएं → अश्वघोष, बौद्ध भिक्षापात्र, बुद्ध के दंत के अवशेष
- चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन किया।
- दरबार में — पार्श्व
  - वसुमित्र
  - नागार्जुन
  - चरक → चिकित्सक → चरक संहिता
  - अश्वघोष

  चिकित्सा केन्द्र - तक्षशिला

⇒ हुविष्क

↳ राजधानी - मथुरा

↳ सिक्कों पर → शिव, विष्णु, स्कन्द की आकृति बनी है।

⇒ अंतिम शासक → वासुदेव

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

- प्रमुख तथ्य

- विम कडफिसस - II → शैव
  कनिष्क → बौद्ध
  हुविष्क → बौद्ध
  वासुदेव → विष्णु, शैव

* कुजुल कडफिसस - II ने केवल तांबे के सिक्के जारी किये।
* कनिष्क - II ने रोमन राजाओं की तरह - सीजर या कैसर की उपाधि ली।
* कनिष्क व कडफिसस के सिक्कों पर उनकी आकृति अंकित है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

⇒ मौर्योत्तर कालीन राजव्यवस्था एवं प्रशासन

मौर्यकाल	मौर्योत्तर काल
केन्द्रीकृत प्रणाली ⟶	विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया को गति मिला

↓

इस प्रक्रिया को रोकने हेतु दैवीय शक्ति का समावेश हुआ → कुछ सीमा तक सफलता मिली

⇓

① – कुषाण शासकों ने देवपुत्र जैसी उपाधि धारण की

② – रोमन परंपरा की तरह मृत राजाओं की मूर्तियां स्थापित करने हेतु मंदिर (देवकुल) बनाने की प्रथा शुरू की।

→ कुषाण शासकों ने दैव शासन की परम्परा की शुरुआत की।

⇒ मौर्योत्तर कालीन अर्थव्यवस्था -

- इस काल के आर्थिक पक्ष का उज्जवल पक्ष व्यापार एवं वाणिज्य का विकास था।
- इस काल की विशेषता है- भारत का पश्चिम एशिया तथा पाश्चात्य विश्व के साथ घनिष्ट संबंध स्थापित होना।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- इस समय व्यापार अरब सागर के तट के बन्दरगाहों से होता था।
- पेरीप्लस ऑफ द इरीथ्रियन सी में भारत के बन्दरगाहों तथा आयात-निर्यात की विस्तृत जानकारी मिलती है - प्रमुख बन्दरगाह →
  - बारबेरीकम → सिन्धु नदी के मुहाने पर
  - तामलुक / ताम्रलिप्ति → बंगाल का पूर्वी तट
  - बेरीगाजा / भड़ौंच / ब्रुगुलच्छ → पश्चिमी तट
  - कोरकई (कोल्ची) → दक्षिणी भारत
  - कावेरीपत्तनम → दक्षिण
  - अरिकामेडु → दक्षिण
  - मुजरिश → दक्षिण
- भड़ौंच मौर्योत्तर काल में सबसे महत्वपूर्ण बन्दरगाह था।
- रोमन साम्राज्य को भेजी जाने वाली वस्तुओं में लोहा और मसाला महत्वपूर्ण था। रोम के साथ भारत का व्यापार भारत के पक्ष में अत्यधिक था, स्थिति यह बन गयी कि रोमन साम्राज्य को भारत से काली मिर्च तथा दासियों का व्यापार बन्द करना पड़ा।
- काली मिर्च की लोकप्रीयता के कारण इसे यवनप्रीया कहा गया।
- तमिल प्रदेश के अरिकामेडु से हमें रोमन बस्तियों व रोमन सिक्कों के साक्ष्य मिले हैं।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- कश्मीर, कलिंग, विदर्भ हीरे के लिए प्रसिद्ध थे।

⇒ **सिक्के** -

सोने का → निष्क, स्वर्ण, पल

चांदी का → शतमान

तांबे का → काकणि

चांदी + सोना + तांबा (मिश्रित) = कर्षापण

⇒ **वाणिज्य एवं व्यापार**

- व्यापार एवं वाणिज्य में मुद्राओं का उपयोग मौर्योत्तर काल की सबसे बड़ी देन है।
- शिल्पी एवं कारीगर इस काल में स्वतंत्र थे।
- जातक में 18 शिल्पियों का उल्लेख व मिलिन्दपन्हो में 75 व्यवसायों का उल्लेख है।
- उद्योगों का इस काल में स्थानीयकरण हो गया
- कुछ व्यापारिक संगठनों के नाम मिलते हैं -

श्रेणी
↓
निगम
↓
पूग
↓
सार्थवाह → व्यापारियों का नेता

चेट्टि → दक्षिण भारत में
बोहरा → गुजरात में
बंजारा → घूम-घूम कर व्यापार

→ दक्षिण भारत के व्यापारी -
- नानादेशी
- अंजुवनम्
- मणिग्रामम्

KGS IAS